1 पद

सूरदास (1478-1583)

पाठ-परिचय :

प्रस्तुत चारों पद भक्तिकाल के प्रसिद्ध कवि सूरदास द्वारा रचित श्रेष्ठ ग्रंथ 'सूरसागर' के भ्रमरगीत से अवतरित हैं। कृष्ण ने मथुरा जाने के बाद स्वयं न लौटकर उद्धव के जरिए गोपियों के पास संदेश भेजा था। उद्धव ने निर्गुण ब्रह्म एवं योग का उपदेश देकर गोपियों की विरह-वेदना को शांत करने का प्रयास किया। गोपियाँ ज्ञान-मार्ग की बजाय प्रेम-मार्ग को पसंद करती थीं। इस कारण उन्हें उद्धव का योग (शुष्क) संदेश पसंद नहीं आया। उद्भव और गोपियों की इसी बातचीत के दौरान वहाँ एक भौंरा आ पहुँचा। गोपियों ने इसी भ्रमर के बहाने उद्धव पर व्यंग्य बाण छोड़े। यहीं से भ्रमरगीत प्रारंभ होता है।

पहला पद

प्रतिपाद्य विषय

मथुरा जाने के पश्चात् श्री कृष्ण को ब्रज के कण-कण, गोपियों तथा राधा व यशोदा-नंद की याद सताती है। श्री कृष्ण अपने परम सखा उद्धव, जो ज्ञान-मार्ग के सिद्धांतों के समर्थक थे, को ब्रज भेजते हैं। श्री कृष्ण जानते थे कि उद्धव के ज्ञान पर गोपियों के निश्छल प्रेम का अवश्य प्रभाव पड़ेगा। गोकुल में उद्धव का आदर-सत्कार तो हुआ, परंतु उनके ज्ञान-मार्ग और योग-साधना की बातें सरल हृदय वाली गोपियों को कड़वी लगती हैं।

ब्रज में उद्धव श्री कृष्ण का संदेश सुनाते हुए गोपियों को निर्गुण ब्रह्म का उपदेश देकर कृष्ण को भुलाने की सलाह देते हैं। उद्धव को लक्ष्य करती हुई गोपियाँ व्यंग्य बाण छोड़ती हुई कहती हैं कि हे उद्धव! आप बड़े भाग्यवान हैं, जो प्रेम के धागे के फंदे में नहीं फँसे। आपका मन प्रेम के वशीभूत नहीं है। जो प्राणी प्रेम के बंधन में फँस जाता है, उसे कहीं भी चैन नहीं मिलता। आपकी स्थिति तो कमल के पत्ते की तरह है, जो जल में रहता है, परंतु उसपर जल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। रात-दिन श्री कृष्ण के साथ रहते हुए भी उद्धव उनके प्रेम से अप्रभावित ही रहे, अर्थात् उनके रंग में नहीं रँगे, बल्कि निर्लिप्त हैं। यही कारण है कि उद्धव को कोई कष्ट व दुख नहीं सहना पड़ता। वे तो तेल की गागर की तरह हैं, जिसे जल के मध्य भी रख दिया जाए तो उसपर पानी की बूँदों का कोई असर नहीं पड़ता। उद्धव का मन भी तेल की तरह चिकना है, जिसपर प्रेम जल कोई प्रभाव नहीं डालता। वे धन्य हैं, जिन्होंने प्रेम रूपी नदी में पाँव नहीं डुबोया तथा उनकी दृष्टि किसी भी रूप पर मोहित नहीं हुई, अर्थात् किसी का प्रेममय रूप उनकी आँखों में नहीं बसा। वे किसी पर मुग्ध नहीं हुए।

सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ उद्धव जी से कहने लगीं कि हम तो भोली-भाली सरल हृदय अबला हैं। जिस प्रकार चींटी गुड़ से लिपटती है, उसी प्रकार हम कृष्ण के प्रेम में अनुरक्त हैं। गुड़ के प्रति चींटी को आसक्ति होती है, उसी तरह गोपियाँ कृष्ण प्रेम में पूर्ण रूप से आसक्त हैं। कृष्ण के वियोग में उनकी दशा दयनीय व असहनीय हो गई है। उद्धव भाग्यशाली हैं, जो निर्लिप्त व अनासक्त हैं।

प्रस्तुत पद में गोपियों की यह शिकायत वाज़िब लगती है कि यदि उद्धव कभी स्नेह के धागे से बँधे होते, तो वे विरह की वेदना की अनुभूति अवश्य कर पाते।

काव्य-सौंदर्य

- उपर्युक्त काव्यांश में गोपियों के प्रेम की तन्मयता का साकार चित्र उपस्थित हुआ है।
- शृंगार रस के अंतर्गत गोपियों के विरह की 'वियोग शृंगार' के रूप में मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है।
- ग्रामीण ब्रजभाषा के प्रयोग में सूरदास सिद्धहस्त हैं।
- प्रस्तुत पद में उपमा अलंकार की छटा दर्शनीय है–
  - 'पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।'
  - 'ज्यों जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।'
  - 'गुर चाँटी ज्यौं पागी।'
- 'प्रीति-नदी' में रूपक अलंकार है।
- 'पुरइनि पात' में 'प' की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।
- कवि की कल्पना-शक्ति अनूठी है।
- संगीतात्मकता के कारण लय व तुक का समन्वय मिलता है।

Scanned with CamScanner

दूसरा पद

प्रतिपाद्य विषय

गोपियाँ अपने मन की पीड़ा को अभिव्यक्त करती हुई उद्धव जी से कहती हैं कि अनेक बातें, जो कृष्ण से कहनी थीं, मन में ही रह गईं। अब वे सारी बातें किसे जाकर कहें? कृष्ण के आगमन के विश्वास पर उन्होंने इतने समय तक शरीर और मन की पीड़ा सहन की। कृष्ण तो नहीं आए, पर उद्धव के योग संदेश को सुन-सुनकर वियोग में जीने वाली गोपियाँ विरह की आग में जल रही हैं। वे चाहती थीं कि अपनी विरहाग्नि को दूर करने के लिए, रक्षा के लिए, कृष्ण को पुकारें। पर जहाँ से आशा थी, उधर से योग की प्रबल धारा बहने लगी। उस धारा ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम किया। अर्थात् उद्धव तो ज्ञान-योग का संदेश लेकर गोपियों को शांत करने आए थे, पर गोपियों की विरहाग्नि और तीव्र हो गई। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ कहने लगीं कि वे अब धैर्य धारण क्यों करें? कृष्ण ने तो मर्यादा नहीं रखी।

प्रस्तुत पद में गोपियों की यह स्वीकारोक्ति कि उनके मन की अभिलाषाएँ मन में ही रह गईं, कृष्ण के प्रति उनके प्रेम की गहराई को अभिव्यक्त करती है।

काव्य-सौंदर्य

- इस काव्यांश में कृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम की गहराई अभिव्यक्त हुई है।
- गोपियों की वाग्विदग्धता की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है।
- कृष्ण और गोपियों का प्रेम सहज मानवीय प्रेम की प्रतिष्ठा करता है।
- अनुप्रास की छटा दर्शनीय है, जैसे–
  'मन की मन ही माँझ', 'अवधि अधार आस आवन',
  'बिरहिनि बिरह', 'धीर धरहिं'
- 'सुनि-सुनि' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
- वक्रोक्ति अलंकार है।
- गोपियों की प्रेम के प्रति निष्ठा और दृढ़ता सराहनीय है।

तीसरा पद

प्रतिपाद्य विषय

उद्धव ब्रज में निर्गुण ब्रह्म और योग का संदेश लेकर आए हैं। श्री कृष्ण जानते हैं कि गोपियों का प्रेम गंभीर व अलौकिक है। अतः गोपियों का प्रेम-मार्ग ही उद्धव के निर्गुण निराकार के ज्ञान को हरा सकता है। निर्गुण भक्ति पर सगुण भक्ति की विजय दिखलाना कवि का अभीष्ट रहा है। योग-मार्ग को हर दृष्टि से हेय बताकर गोपियाँ अपनी बात पर दृढ़ रहकर सगुण की उपासना को महत्त्व देती हुई कहती हैं कि कृष्ण तो उनके लिए हारिल पक्षी की लकड़ी के समान हैं। जिस प्रकार हारिल पक्षी हर परिस्थिति में सहारे स्वरूप लकड़ी को अपने पंजों में जकड़े रहता है, कभी छोड़ता नहीं, उसी प्रकार श्री कृष्ण के प्रेम को उन्होंने दृढ़ता के साथ पकड़ रखा है, क्योंकि वही उनके जीवन के एकमात्र सहारे हैं। गोपियों ने मन, वचन और कर्म से नंद बाबा के पुत्र कृष्ण को अपने हृदय में हमेशा के लिए बसा लिया है। वे ही उनके जीवन के एकमात्र अवलंब हैं। यहाँ तक कि प्रत्येक अवस्था में उन्हें कृष्ण की ही रट लगी रहती है। रात-दिन अर्थात् जागते हुए (जाग्रतावस्था) सोते हुए (सुप्तावस्था) और तो और स्वप्न (स्वप्नावस्था) में भी कृष्ण के नाम को ही जकड़ा हुआ है, अर्थात् सदा स्मरण करती रहती हैं। किसी भी स्थिति तथा अवस्था में एक क्षण भी गोपियाँ कृष्ण से विलग नहीं होतीं। उद्धव के मुख से योग का उपदेश सुनकर उन्हें ऐसा प्रतीत होता है, मानों कड़वी ककड़ी खा ली हो। वे उद्धव जी को संबोधित करते हुए कहती हैं कि वे योगरूपी व्याधि (बीमारी) ले आए, जिसे न कभी देखा और न कभी कानों से सुना और न कभी भोगा। गोपियाँ कृष्ण के विरह में दुखी हैं, अतः निर्गुण ब्रह्म का उपदेश उन्हें बीमारी-सा प्रतीत होता है।

सूरदास जी कहते हैं कि अंत में गोपियाँ अपने मन के उद्गारों को व्यक्त करती हुई उद्धव जी से कहती हैं कि इस योग की चर्चा उनसे (कृष्ण से) जाकर करो, जिनका मन चकरी के समान चंचल है। अस्थिर व चंचल प्रवृत्ति वाले ही तुम्हारे उपदेश सुन मन को स्थिर कर निर्गुण ब्रह्म की उपासना करेंगे। गोपियों तो कृष्ण के प्रेम में अपने मन को स्थिर कर चुकी हैं। अतः निराकार की चर्चा व्यर्थ है। इस प्रकार से गोपियाँ विभिन्न तर्क देकर स्वयं को निर्गुण ब्रह्म की आराधना करने में असमर्थ सिद्ध करती हैं। वे उद्धव की योग-साधना को कड़वी ककड़ी जैसा बताकर अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास प्रकट करती हैं।

काव्य-सौंदर्य

- ब्रजभाषा का माधुर्य है।
- उपमा अलंकार की छटा– 'हारिल की लकरी'
- उत्प्रेक्षा अलंकार– सुनत जोग लागत है ऐसी, ज्यौं करुई ककरी,
- अनुप्रास अलंकार– 'करुई ककरी' ('क' वर्ण की आवृत्ति), 'हमारे हरि हारिल'
  ('ह' वर्ण की आवृत्ति) 'नंद-नंदन ('न' वर्ण की आवृत्ति)
- 'कान्ह-कान्ह' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
- गोपियाँ वाकपटु व तर्कशील हैं–यह कवि की मौलिक उद्भावना है।
- गीति-तत्व है।

Scanned with CamScanner

चौथा पद

प्रतिपाद्य विषय

प्रस्तुत पद में गोपियाँ उद्धव जी को 'मधुकर' अर्थात् भौंरा कहकर संबोधित करती हैं, क्योंकि भौंरा क्या जाने प्रेम का स्वरूप! उद्धव जी के मुख से योग का उपदेश सुन-सुनकर गोपियाँ खीझ उठती हैं। गोपियों को ज्ञान-विषयक यह चर्चा कष्टदायी प्रतीत होती है। उद्धव जी को सुनाते हुए एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि 'सुना है, श्री कृष्ण जी अब राजनीति सीख गए हैं। मधुकर (उद्धव) की बात को अच्छी तरह से समझ लिया है। उनकी निर्गुण निराकार की चर्चा से यह सहज ही अनुमान लग जाता है कि अब श्री कृष्ण भी उद्धव के सान्निध्य में रहकर किस प्रकार की बातें करने लगे हैं। उनकी बुद्धि का परिचय इसी से लग जाता है कि उन्होंने स्त्रियों के लिए योग-साधना का उपदेश कहलाकर भेजा है। हे सखी! पहले के लोग बहुत भले और सीधे होते थे, जो दूसरों के हित के लिए दौड़ते-फिरते थे।' इस कथन के माध्यम से गोपियाँ उद्धव पर परोक्ष रूप से व्यंग्य कर रही हैं कि उद्धव ऐसे ही लोगों में से एक हैं, जो गोपियों का भला करने इतनी दूर दौड़े चले आए हैं। गोपियाँ श्री कृष्ण से इतनी ही विनती करती हैं कि वे उनके मन लौटा दें, जो उन्होंने चलते समय चुराए थे। भाव यह है कि मन तो गोपियों के पास है ही नहीं, क्योंकि उस मन को तो श्री कृष्ण उसी समय मथुरा ले गए, जब वे स्वयं अक्रूर जी के साथ गए थे। यह तो आश्चर्य की बात है कि जो श्री कृष्ण दूसरों को अनीति करने से रोकते हैं, वे स्वयं अनीति की बात कैसे कर सकते हैं? सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ आपस में कह रही हैं कि राजधर्म तो वहीं है, जहाँ राजा अपनी प्रजा को न सताए। गोपियों को इस तरह दुखी करके श्री कृष्ण कैसा राजधर्म निभा रहे हैं।

काव्य-सौंदर्य

- उद्धव जी के माध्यम से श्री कृष्ण को भी उपालंभ दिया गया है। गोपियाँ उद्धव को ताना मारती हैं कि कृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है। गोपियों द्वारा उद्धव जी को राजधर्म (प्रजा का हित) याद दिलाया जाना सूरदास की लोकधर्मिता को दर्शाता है।
- 'बढ़ी-बुद्धि' व 'चलत-चुराए' में अनुप्रास अलंकार है।
- गोपियों का तर्क पठनीय है।

समेटिव असेसमेंट

काव्यबोध पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. **ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।**
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी॥
(क) उद्धव को 'बड़भागी' कहने के पीछे गोपियों का क्या उद्देश्य है?
(ख) गोपियों के अनुसार उद्धव किससे अछूते हैं?
(ग) उद्धव को भाग्यहीन बनाने में उनके 'मन' की क्या भूमिका है?
(घ) उद्धव के स्वभाव की तुलना 'कमल के पत्ते' तथा 'तेल की गागर' से क्यों की है?
(ङ) 'प्रीति-नदी' में कौन-सा अलंकार है?

2. **हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।**
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपने मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए॥
(क) कृष्ण राजनीति जान गए हैं, गोपियाँ ऐसा क्यों कहती हैं?
(ख) गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी, जो उनके वाक्-चातुर्य में मुखरित हो उठी?
(ग) गोपियों के कथनानुसार सच्चा 'राजधर्म' क्या है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गोपियों के मन की बात मन में ही क्यों रह गई?
2. गोपियों ने उद्धव को 'बड़भागी' क्यों कहा?
3. उद्धव गोपियों के पास क्यों आए?
4. उद्धव के सुखी होने का क्या कारण है?
5. गोपियों ने अपनी तुलना किससे की और क्यों?
6. सूरदास के 'भ्रमरगीत' का मूलभाव क्या है?
7. गोपियाँ कृष्ण-भक्ति के माध्यम से क्या संदेश देना चाहती हैं?
8. गोपियाँ तन-मन की व्यथा को क्यों सह रही हैं?
9. कृष्ण के प्रति गोपियों का प्रेम क्या सिद्ध करता है?
10. सूर के पदों को हिंदी साहित्य के किस काल में तथा किस काव्यधारा के अंतर्गत रखा गया है?
11. कृष्ण-प्रेम में लिप्त गोपियों की मनोदशा कैसी है?

Scanned with CamScanner

12. गोपियों ने उद्धव के योग की हँसी कैसे उड़ाई?

13. 'जिनके मन चकरी' से कवि क्या कहना चाहता है?

14. गोपियों ने 'नंद-नंदन' को कहाँ और कैसे बसाया है?

15. कृष्ण की बुद्धिमत्ता गोपियों को किस रूप में दिखाई पड़ती है?

16. गोपियों ने कृष्ण पर क्या कहकर कटाक्ष किए हैं?

17. उद्धव के गुरु कौन हैं, उन्होंने उद्धव को कौन-सा ग्रंथ पढ़ाया है?

18. गोपियों का उद्धव से तर्क-वितर्क करना पाठक के मन में कैसे भाव जगाता है?

19. गोपियाँ क्या तर्क देकर स्वयं को निर्गुण ब्रह्म की आराधना करने में असमर्थ सिद्ध करती हैं?

20. सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

21. गोपियों ने कृष्णभक्ति की सार्थकता कैसे सिद्ध की?

22. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है? [NCERT]

23. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं? [NCERT]

24. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है? [NCERT]

25. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें। [NCERT]

26. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए? [NCERT]

27. गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए। [NCERT]

28. उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी, जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी? [NCERT]

29. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया। उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए। [NCERT]

30. गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की है? [NCERT]

31. गोपियों के द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है? [NCERT]

32. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया? [NCERT]

33. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है? [NCERT]

34. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए, जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं? [NCERT]

Scanned with CamScanner